ज्ञानविविधा
कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-2.25
Vol.-2; Issue-4 (Oct.-Dec.) 2025
Page No.- 409-412
©2025 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

Author's :

नीरज चौहान

शोधार्थी, शोध केंद्र - हिन्दी विभाग,
विल्सन कॉलेज (स्वायत्त), गिरगांव, मुंबई.

Corresponding Author :

नीरज चौहान

शोधार्थी, शोध केंद्र - हिन्दी विभाग,
विल्सन कॉलेज (स्वायत्त), गिरगांव, मुंबई.

हिंदी ग़ज़ल में व्यक्त मानवीय मूल्य

शोध सारांश : हिंदी ग़ज़ल का संबंध मानव जीवन के अनुभवों, संवेदनाओं और सामाजिक यथार्थ से रहा है। यह शोध आलेख हिंदी ग़ज़लों में प्रेम, करुणा, समानता, सहअस्तित्व, इंसानियत, संवेदना, न्याय और मानवीय गरिमा जैसे मूल्यों से जुड़े कुछ पक्षों पर प्रकाश डालेगा। हिंदी ग़ज़ल भारतीय काव्य परंपरा का वह स्वरुप है जिसमें मानव जीवन की संवेदनाएँ, अनुभव और सामाजिक यथार्थ अत्यंत प्रभावपूर्ण ढंग से व्यक्त होते हैं। हिंदी ग़ज़ल में मानवीय मूल्य केंद्रीय रूप से उपस्थित रहते हैं। इन मूल्यों के माध्यम से ग़ज़ल न केवल व्यक्तिगत भावनात्मक संसार को अभिव्यक्त करती है, बल्कि सामाजिक संघर्षों, मानव पीड़ा और समकालीन परिस्थितियों को भी गहनता से उजागर करती है। भाषा की संक्षिप्तता, सूक्ष्म बिंबों और प्रतीकों के माध्यम से हिंदी ग़ज़ल मानवीय मूल्यों को भावनात्मक गहराई प्रदान करती है। यह शोध-आलेख हिंदी ग़ज़ल में व्यक्त इन मानवीय मूल्यों पर प्रकाश डालेगा और विश्लेषित करेगा कि ग़ज़ल किस प्रकार मानवीय संवेदना और सामाजिक चेतना को सार्थक रूप में प्रस्तुत करती है। इस प्रकार हिंदी ग़ज़ल केवल साहित्यिक विधा नहीं, बल्कि मानवीय मूल्यों का संवाहक भी है। यह शोध-पत्र हिंदी ग़ज़ल में निहित इन मानवीय मूल्यों पर प्रकाश डालेगा और यह दिखाएगा कि ग़ज़ल किस प्रकार मनुष्य और समाज दोनों के बीच संवेदनात्मक सेतु का कार्य करती है।

इस शोध-आलेख का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि हिंदी ग़ज़ल में मानवीय मूल्य किस प्रकार व्यक्त होते हैं, उनका साहित्यिक तथा सामाजिक महत्व क्या है, और वे समकालीन समाज की संरचना तथा मानवीय चेतना को कैसे प्रभावित करते हैं।

शब्द कुंजी : प्रेम, महानगरीय जीवन,नारी जीवन,आम आदमी की पीड़ा, मानवीय गरिमा, करुणा, सामाजिक यथार्थ, संवेदना, न्याय, समकालीन अनुभव, नैतिक मूल्य, मानव संघर्ष।

प्रस्तावना : हिंदी साहित्य की बहुआयामी परंपरा में ग़ज़ल एक ऐसी काव्य विधा है जो अपने स्वरुप, भाषा, भाव और संवेदना के स्तर पर विशिष्ट स्थान रखती है। मूलतः अरबी-फारसी सांस्कृतिक परंपरा से विकसित ग़ज़ल ने भारतीय परिवेश में प्रवेश करते ही अपना रूप, शैली और विषयगत विस्तार व्यापक बनाया। हिंदी ग़ज़ल विशेष रूप से मानवीय जीवन के अनुभवों, संवेदनाओं और संघर्षों को गहनता से अभिव्यक्त करने का माध्यम बनती है। इसमें व्यक्तिगत भावनाओं से लेकर सामाजिक-राजनीतिक यथार्थ तक अनेक आयाम ऐसे हैं जो मनुष्य की आत्मा, उसकी आकांक्षाओं, कष्टों और मानवता के प्रति उसकी आस्था को रेखांकित करते हैं।

हिंदी ग़ज़ल का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि इसके केंद्र में मनुष्य और उसके मूल्य उपस्थित रहते हैं। प्रेम, करुणा, समानता, न्याय, सह-अस्तित्व, मानवीय गरिमा, सामाजिक पीड़ा, महानगरीय जीवन, नारी जीवन की जटिलताएँ, श्रमिक वर्ग की कठिनाइयाँ और आम आदमी की वेदना—ये सभी विषय हिंदी ग़ज़ल के मूल में हैं। यह शोध-आलेख हिंदी ग़ज़ल में व्यक्त इन मानवीय मूल्यों पर प्रकाश डालेगा और विश्लेषण करेगा कि किस प्रकार ग़ज़ल समकालीन समाज में मानवता की प्रासंगिकता को स्थापित करती है। इसके साथ ही यह अध्ययन इस बात की खोज करेगा कि ग़ज़ल आधुनिक जीवन की विडंबनाओं, संघर्षों और मानवीय संवेदनाओं को किस रूप में अभिव्यक्त करती है।

मुख्य विषय :

1. हिंदी ग़ज़ल का विकास और मानवीय मूल्य : हिंदी ग़ज़ल ने समय के साथ अपनी भाषा, विषय और स्वरुप में व्यापक परिवर्तन देखे हैं। प्रारंभिक दौर में जहाँ प्रेम, विरह, सौंदर्य और रुमानी भाव प्रमुख थे, वहीं आधुनिक काल में ग़ज़ल ने सामाजिक यथार्थ की ओर निर्णायक मोड़ लिया। परिणामस्वरुप मानव-केंद्रित मूल्य ग़ज़ल की मूल संरचना का प्रमुख अंग बन गए। ग़ज़लकारों ने प्रेम को केवल रुमानी दायरे तक सीमित न रखते हुए उसे मानवता और करुणा की व्यापक अनुभूति से जोड़ा। इस प्रकार हिंदी ग़ज़ल केवल 'मैं' की अभिव्यक्ति न रहकर 'हम' की संवेदना को भी स्वर देने लगी। दुष्यन्त जी लिखते हैं– **"मुझमें रहते हैं करोड़ों लोग चुप कैसे रहूँ,**

हर गजल अब सल्तनत के नाम एक बयान है।"[1]

श्रमिक वर्ग, नारी की स्थिति, अन्याय के विरुद्ध संघर्ष, महानगरीय जीवन की अकेलापन-भरी परिस्थितियाँ और आम आदमी की पीड़ा ग़ज़ल का केंद्रीय स्वर बनती गई।

"कहते हैं ग़ज़ल जिसको, शबनम भी है शोला भी।
आक्रोश है धनिया का, होरी का पसीना है।"[2]

यह प्रसिद्ध शेर समकालीन हिंदी ग़ज़लकार वशिष्ठ अनूप की ग़ज़ल की परिभाषा को दर्शाता है, जो ग़ज़ल को महज़ श्रृंगार न मानकर, आम आदमी के संघर्ष, आक्रोश और 'होरी' (प्रेमचंद के गोदान के पात्र) के पसीने (मेहनत) का अक्स मानते हैं।

2. प्रेम और करुणा के मानवीय मूल्य : मानव सभ्यता की नींव प्रेम और करुणा जैसे मूल्यों पर टिकी है। हिंदी ग़ज़ल में प्रेम केवल व्यक्तिगत भावना नहीं बल्कि जीवन का दार्शनिक-मानवीय आधार है। **"कबीर ने प्रेम के फ़लसफ़े को 'शीश उतारे भुईं धरे' के शब्दों में व्यक्त किया है, इसी बात को नंदलाल पाठक जी ने देखिए किस तरह कहा है –**

उठा के सर प्रेम की डगर पर चला जो उसको लगी है ठोकर
कबीर साहब बता गए हैं ज़मीन पर सर उतार पहले।"[3]

यह प्रेम कभी आत्मीय संबंधों में दिखाई देता है, तो कभी समाज के लिए, मनुष्यता के लिए, पीड़ित वर्गों के लिए करुणा के रूप में उभरता है।

आधुनिक ग़ज़लकारों ने प्रेम को संघर्ष, आशा और विश्वास से जोड़ा है। प्रेम एक ऐसा मूल्य है जो विभाजनकारी शक्तियों के विरुद्ध मनुष्य को एकजुट करता है। करुणा ग़ज़ल को सामाजिक चिंतन से जोड़ती है और

मानवता को उसका उच्चतम रूप प्रदान करती है। हरजीत जी एक ऐसे ग़ज़लकार हैं जिनकी ग़ज़लों में एक ऐसा जीवन राग है जो जिंदगी में प्रेम और चिंतन के रास्तों से ही होकर आता है। उनका ये शेर द्दष्टव्य है-

"ज़रा देना कोई काग़ज़ मैं हिसाब अपना लिख दूं
जो गंवा दिया वो क्या था जो मुझे मिला वो क्या है।"[4]

3. महानगरीय जीवन के अनुभव : महानगरों का जीवन तेज़ रफ्तार, तनाव, अकेलेपन और प्रतिस्पर्धा से भरा हुआ है। हिंदी ग़ज़ल ने इस महानगरीय यथार्थ को अत्यंत सूक्ष्मता से पकड़ा है। महानगर मनुष्य को सुविधाएँ तो देता है, पर उसकी संवेदनाओं को खोखला भी बनाता है। महानगरों की भीड़-भाड़ में छिपे अकेलेपन को भी ग़ज़लकारों ने अपनी ग़ज़लों में संवेदना के साथ प्रस्तुत किया है। हस्तीमल हस्ती का यह शेर भीतर से खोखले होते जाने की मनुष्य की आकुलता और टीस को व्यक्त करता है –

"इस दुनियादारी का कितना भारी मोल चुकाते हैं।
जब तक घर भरते हैं, अपना हम खाली हो जाते हैं।"[5]

ग़ज़लकारों ने रिश्तों में आती दूरी, समय की कमी, भावनात्मक टूटन, और मानसिक संघर्षों को अपनी रचनाओं में सहज अभिव्यक्ति दी है-

"ट्विटर या फेसबुक से न फुरसत मिली कभी,
मित्रों से जा के मिलने-मिलाने के दिन गए।
'नेट' पर जुड़ते गए संसार से,
कट गए अपने ही घर-परिवार से।"[6]

महानगरों में रहने वाला व्यक्ति अक्सर भीड़ में भी अकेला महसूस करता है।

"तुम अभी शहर में क्या नए आए हो
रुक गए राह में हादिसा देख कर।"[7]

ग़ज़ल का यह चित्रण न केवल आधुनिक जीवन की वास्तविकता को सामने लाता है। बल्कि यह बताता है कि मानवीय मूल्य किस प्रकार बदलते परिवेश में चुनौतियों से घिरते जाते हैं।

4. नारी जीवन: संघर्ष और संवेदना : हिंदी ग़ज़ल की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि यह है कि इसमें नारी जीवन की विडंबनाओं, संघर्षों और आकांक्षाओं को महत्व मिला है। नारी केवल सौंदर्य की वस्तु नहीं रही, बल्कि एक भावनात्मक, बौद्धिक और संघर्षशील अस्तित्व के रूप में उभरती है। श्रमिक जी लिखते हैं-

"दिनभर कूड़ा बिनती है थक जाती है
कुछ कविताएं सोती हैं चौराहे पर।"[8]

ग़ज़लकारों ने नारी की दबी-कुचली स्थितियों, सामाजिक दबाव, घरेलू हिंसा, लैंगिक असमानता, रोजगार और आत्मसम्मान के प्रश्नों को उठाया है।

"ये क्या गजब किए बैठी हो सारा बोझ लिए बैठी हो
बांट रही हो अमरित सबको सबका जहर पिए बैठी हो
बीत गईं सदियों पर सदियां गुमसुम ठौर-ठिए बैठी हो
जिगरा है बूता है बल है फिर भी हार जिए बैठी हो।"[9]

इन शेरों में स्त्री-जीवन की झलक तो मिलती है, लेकिन उनमें समाज की भूमिका पर अप्रत्यक्ष रूप से सवाल भी उठते हैं।

5. आम आदमी की पीड़ा और सामाजिक यथार्थ : समकालीन ग़ज़ल आम आदमी का साहित्य बन चुकी है। बेरोज़गारी, महंगाई, भ्रष्टाचार, अन्याय, गरीबी, श्रमिक वर्ग की वेदना और सामाजिक शोषण जैसे मुद्दे ग़ज़ल की सहज अभिव्यक्ति बन गए हैं-

"समस्याओं से घिरा है आदमी

परिस्थितियों में बिका है आदमी
आम जो इन्सान, चौतरफा दुखी
जिन्दगी ढोते, मरा है आदमी।"[10]

ग़ज़लकार आम आदमी की आवाज़ को स्वर देते हैं और उसके संघर्षों को साहित्यिक रूप प्रदान करते हैं। **"कमरा है एक उसमें मेहमान जो सो रहे हैं पत्नी के सामने है विश्राम की समस्या।"[11]**

यह पीड़ा केवल शिकायत नहीं होती, बल्कि सामाजिक परिवर्तन की चेतना को भी जन्म देती है। ग़ज़लकार अन्याय के विरुद्ध खड़े होने का संदेश देते हैं और मानव समुदाय को उसके अधिकारों और सम्मान की याद दिलाते हैं।

निष्कर्ष : हिंदी ग़ज़ल अपने मूल स्वभाव में मानव-केंद्रित साहित्यिक विधा है, जो मनुष्य के अनुभवों, भावनाओं और सामाजिक यथार्थ को अत्यंत सूक्ष्मता और संवेदनशीलता के साथ अभिव्यक्त करती है। इस शोध-आलेख के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि हिंदी ग़ज़ल में व्यक्त मानवीय मूल्य—जैसे प्रेम, करुणा, समानता, सह-अस्तित्व, न्याय, मानवीय गरिमा, नारी संवेदना, महानगरीय जीवन की विडंबनाएँ और आम आदमी की पीड़ा—समकालीन समाज की वास्तविक स्थितियों को प्रतिबिंबित करते हैं। ग़ज़लकारों ने आधुनिक समय के तनाव, संघर्ष, असमानताओं और मानवीय संबंधों के बदलते स्वरूप को नए प्रतीकों, बिंबों और भाषा की संक्षिप्तता के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

हिंदी ग़ज़ल केवल भावनात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि एक सामाजिक दस्तावेज के रूप में भी उभरती है, जो मानवीय चेतना को जगाने और समाज में नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना का प्रयास करती है। ग़ज़ल में व्यक्त मानवता-केंद्रित विचार मनुष्य को उसके भीतर बसे करुणामय, संवेदनशील और नैतिक अस्तित्व की याद दिलाते हैं।

इस प्रकार यह निष्कर्ष स्थापित होता है कि हिंदी ग़ज़ल आधुनिक जीवन की जटिलताओं के बीच एक संवेदनात्मक सेतु बनकर मानव मूल्यों को सशक्त, विस्तृत और सार्थक रूप में प्रस्तुत करती है।

संदर्भ :

1. साये में धूप, दुष्यन्त कुमार, पृष्ठ संख्या 57, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, इक्कीसवां संस्करण:2011.
2. छन्द तेरी हँसी का, वशिष्ठ अनूप, वाणी प्रकाशन, 2023.
3. अनभै (पीअर रिव्यूड शोध एवं सृजन त्रैमासिकी), संस्थापक एवं प्रधान संपादक डॉ. रतनकुमार पांडेय, पृष्ठ संख्या 6, अक्टूबर-दिसंबर 2024.
4. हिंदी ग़ज़ल की नई चेतना, ज्ञान प्रकाश विवेक, पृष्ठ संख्या 79, प्रशासन संस्थान, 2021.
5. हिंदी ग़ज़ल सरोकार, चुनौतियाँ और संभावनाएँ, कमलेश भट्ट कमल, पृष्ठ संख्या 58, प्रकाशन संस्थान 2020.
6. हिंदी ग़ज़ल की अवधारणा, ज़हीर कुरेशी, पृष्ठ संख्या 31, समन्वय प्रकाशन, 2021.
7. बशीर बद्र, Rekhta-https://www.rekhta.org, तुम अभी शहर में क्या नए आए हो – ग़ज़ल, https://share.google/CzLgUVGaXBFcq1Rli, Accessed on 19th Dec 2025.
8. आलोचना की यात्रा में हिंदी गजल, डॉ. जीवन सिंह, पृष्ठ संख्या 190, बोधि प्रकाशन, 2017.
9. आलोचना की यात्रा में हिंदी गजल, डॉ. जीवन सिंह, पृष्ठ संख्या 73, बोधि प्रकाशन, 2017.
10. साठोत्तरी हिंदी ग़ज़ल, डॉ. मधु खराटे, पृष्ठ संख्या 153, विद्या प्रकाशन, 2011.
11. साठोत्तरी हिंदी ग़ज़ल, डॉ. मधु खराटे, पृष्ठ संख्या 166, विद्या प्रकाशन, 2011.

•